Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487 editor@aijmr.com
Volume 2, Issue 1, January-February 2024
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2024.v02i01.1309

पुनर्जागरण और आधुनिक यूरोपीय समाज का निर्माण

आशा सुनारीवाल

सह आचार्य
इतिहास, राजकीय महाविद्यालय सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) राज.

शोध सारांष
15वीं शताब्दी के यूरोप में एक भारी वैचारिक क्रांति का आगमन हुआ। थलीय मार्ग से भारत की ओर आने वाले मार्गों पर उस्मानी तुर्कों ने आधिपत्य स्थापित कर लिया। पूर्व और पश्चिम (भारत और रोमन साम्राज्य) के बीच विचारों और वस्तुओं का जो आदान–प्रदान शताब्दियों से हो रहा था, वह अचानक बंद हो गया। भारत के मसाले जो रोमन रसोई का जायका बढ़ाते थे, और भारत और चीन के विचार जो यूरोपीय बौद्धिक जगत की ज्ञान पिपासा शांत करते थे, दोनों बंद हो गए। फलतः इटली, स्पेन और पुर्तगाल के साहसिक नाविक भारत की खोज में निकल पड़े। चूंकि कुस्तुनतुनिया नगर में ढेर सारे यूरोपीय विद्वान अपनी ज्ञान की पोथियों को लेकर निवास कर रहे थे। उस्मानी तुर्कों द्वारा इस नगर पर कब्जा हो जाने के बाद ये लोग रोम, वेनिस, मिलान और जेनेवा की ओर चले गए और ज्ञान का वितरण और विश्लेषण भूमध्यसागरी देशों (इटली, स्पेन और पुर्तगात) में होने लगा। फलतः लोग इस प्राप्त ज्ञान के आलोक में जीव, जगत और धर्म पर विचार करने लगे। दूसरी ओर पोप के नेतृत्व में मुसलमानों से लड़े गए धर्म युद्ध में ईसाई देश हार गये। फलतः रोम के पोप और ईसाई धर्म की अजेयता का भ्रम टूट गया। लोग नवीन तर्काधारित ज्ञान पर जोर देने लगे। दांते, चौसर, मैकियावला और पेट्रार्क ने यूरोपीय बौद्धिक वर्ग को नये ढंग से सोचने को मजबूर किया। इस सोचने विचारे की प्रवृत्ति को विश्व इतिहास में पुनर्जागरण गया। इस यूरोपीय पुनर्जागरण ने इटली के समाज और राजनीति काच आधार को बदल दिया। जो सामाजिक और राजनीतिक चिंतन ईश्वर केद्रित हुआ करता था, वह अब लोक और लोग केन्द्रित हो गया। यह मान लिया गया है कि मनुष्य को कोई 'डिवाइन एजेन्सी' नहीं प्रभावित करती है। मनुष्य अपना भाग्य विधाता स्वयं है। इस पुनर्जागरण के कारण मनुष्य के विचार में आस्था और विश्वास की जगह तर्क और वैज्ञानिक प्रेक्षण ने ले लिया।

मुख्य शब्द – वैचारिक क्रांति, पुनर्जागरण, मानवाधिकार, आंदोलन, समग्ररूपेण, अमेरीकी क्रांति, फ्रांसीसी क्रांति, ज्ञानोदय काल।

प्रस्तावना

पुनर्जागरण (Renaissance) यूरोप के इतिहास की एक महत्वपूर्ण बौद्धिक, सांस्कृतिक और सामाजिक क्रांति थी, जिसने मध्यकालीन रूढ़िवादी व्यवस्था को चुनौती देकर आधुनिक युग की नींव रखी। "पुनर्जागरण" का अर्थ है कृ "पुनर्जन्म"। यह आंदोलन लगभग 14वीं से 16वीं शताब्दी के बीच यूरोप में विकसित हुआ। इसका प्रारम्भ इटली से हुआ और बाद में यह पूरे यूरोप में फैल गया। पुनर्जागरण ने मानवतावाद, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, कला, साहित्य, शिक्षा और राजनीतिक चेतना को नई दिशा प्रदान की। इसी के परिणामस्वरूप आधुनिक यूरोपीय समाज का निर्माण संभव हुआ।

पुनर्जागरण का अर्थ एवं स्वरूप

पुनर्जागरण प्राचीन यूनानी और रोमन संस्कृति के पुनर्जीवन का आंदोलन था। इस काल में मनुष्य की बुद्धि, तर्क और क्षमता को महत्व दिया गया। मध्यकाल में धार्मिक संस्थाएँ समाज पर हावी थीं, जबकि पुनर्जागरण ने व्यक्ति की स्वतंत्र सोच और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया।

पुनर्जागरण की प्रमुख विशेषताएँ

- मानवतावाद का विकास

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487 editor@aijmr.com
Volume 2, Issue 1, January-February 2024
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2024.v02i01.1309

- वैज्ञानिक दृष्टिकोण
- कला एवं साहित्य का उत्कर्ष
- व्यक्तिवाद की भावना
- शिक्षा का प्रसार
- धार्मिक रूढ़ियों का विरोध

पुनर्जागरण के कारण

1. धर्मयुद्धों का प्रभाव – धर्मयुद्धों के कारण यूरोप का संपर्क पूर्वी देशों से बढ़ा, जिससे नए विचार और ज्ञान यूरोप पहुँचे।
2. व्यापार और नगरों का विकास – व्यापार के विकास से एक समृद्ध मध्यम वर्ग उभरा, जिसने शिक्षा और कला को संरक्षण दिया।
3. कुस्तुन्तुनिया का पतन (1453 ई.) – कुस्तुन्तुनिया पर तुर्कों के अधिकार के बाद अनेक विद्वान इटली आ गए और अपने साथ प्राचीन यूनानी साहित्य एवं ज्ञान लेकर आए।
4. मुद्रण कला का आविष्कार – गुटेनबर्ग द्वारा मुद्रण कला के आविष्कार से पुस्तकों का प्रसार हुआ और शिक्षा का विकास हुआ।
5. चर्च की बुराइयाँ – चर्च की रूढ़ियों और भ्रष्टाचार से लोग असंतुष्ट थे, जिससे नए विचारों को बढ़ावा मिला।

पुनर्जागरण और आधुनिक यूरोपीय समाज का निर्माण

1. मानवतावाद का विकास – पुनर्जागरण ने मानव जीवन और उसकी क्षमताओं को महत्व दिया। मानवतावादियों ने व्यक्ति की स्वतंत्रता, शिक्षा और नैतिक विकास पर बल दिया। इससे आधुनिक समाज में व्यक्तिगत अधिकारों और स्वतंत्रता की भावना विकसित हुई। प्रमुख मानवतावादी– पेट्रार्क, इरास्मस, थॉमस मोर
2. वैज्ञानिक चेतना का विकास

पुनर्जागरण ने अंधविश्वासों के स्थान पर तर्क और विज्ञान को महत्व दिया। वैज्ञानिकों ने नए आविष्कार और खोजें कीं। प्रमुख वैज्ञानिक – कोपरनिकस, गैलीलियो, न्यूटन इन वैज्ञानिक खोजों ने आधुनिक वैज्ञानिक समाज की नींव रखी।

3. शिक्षा और ज्ञान का प्रसार – पुनर्जागरण के दौरान शिक्षा का विस्तार हुआ। विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई और साहित्यिक रचनाओं का विकास हुआ। लोगों में पढ़ने–लिखने की रुचि बढ़ी। प्रभाव – साक्षरता में वृद्धि, आधुनिक शिक्षा प्रणाली का विकास, तर्कशील सोच का विस्तार
4. कला और साहित्य का उत्कर्ष – इस काल में कला और साहित्य में अभूतपूर्व प्रगति हुई। कलाकारों ने मानव जीवन और प्रकृति को यथार्थ रूप में चित्रित किया। प्रमुख कलाकार : लियोनार्डो दा विंची, माइकल एंजेलो, राफेल, प्रमुख साहित्यकार– दांते, शेक्सपियर, सर्वांतेस

इनकी रचनाओं ने आधुनिक यूरोपीय संस्कृति को नई पहचान दी।

5. धार्मिक सुधार आंदोलन की प्रेरणा – पुनर्जागरण ने चर्च की निरंकुशता को चुनौती दी। इसके परिणामस्वरूप धार्मिक सुधार आंदोलन शुरू हुआ। मार्टिन लूथर जैसे सुधारकों ने धार्मिक स्वतंत्रता और व्यक्तिगत विश्वास को महत्व दिया। प्रभाव – चर्च की शक्ति में कमी , धार्मिक सहिष्णुता का विकास, आधुनिक धर्मनिरपेक्ष समाज की शुरुआत
6. राजनीतिक परिवर्तन और राष्ट्रवाद – पुनर्जागरण के प्रभाव से सामंतवाद कमजोर हुआ और राष्ट्रीय राज्यों का उदय हुआ। लोगों में राष्ट्रीय चेतना और राजनीतिक जागरूकता बढ़ी।

प्रभाव – आधुनिक राष्ट्र–राज्य की अवधारणा, लोकतांत्रिक विचारों का विकास, नागरिक अधिकारों की भावना

7. आर्थिक परिवर्तन – व्यापार, बैंकिंग और उद्योगों के विकास से पूंजीवाद का उदय हुआ। इससे यूरोप आर्थिक रूप से मजबूत बना प्रभाव – व्यापारी वर्ग का विकास, औद्योगिक क्रांति की पृष्ठभूमि तैयार आधुनिक आर्थिक व्यवस्था की शुरुआत

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487 editor@aijmr.com
Volume 2, Issue 1, January-February 2024
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2024.v02i01.1309

पुनर्जागरण का आधुनिक यूरोप पर प्रभाव

- आधुनिक विज्ञान और तकनीक का विकास
- लोकतंत्र और मानव अधिकारों की अवधारणा का विस्तार
- शिक्षा और बौद्धिक स्वतंत्रता का विकास
- आधुनिक कला और संस्कृति का निर्माण
- राष्ट्रवाद और आधुनिक राज्य व्यवस्था का विकास
- सामाजिक सुधार आंदोलनों को प्रेरणा

पुनर्जागरण की सीमाएँ

- इसका प्रभाव प्रारम्भ में केवल उच्च वर्ग तक सीमित था।
- महिलाओं को समान अधिकार नहीं मिले।
- ग्रामीण क्षेत्रों में परिवर्तन धीमा था।

अब यूरोप में चिंतन और चिंता के केन्द्र में मनुष्य और उसका पर्यावरण आ गये। पुनर्जागरण से पूर्व यूरोप का चिंतन धर्म और ईश्वराधारित था। परन्तु अब चिंतन, चिंतक, वैज्ञानिक और समाज विज्ञानी मनुष्य और उसके परिवेश को अपना विषय बनाने लगे। अब चिंतन और मनन मनुष्य को सुखी और समृद्ध करने पर होने लगा। पेट्राक से पहले दांते ने डिवाइन कॉमेडी में स्वर्ग का मजाक उडाया। थॉमस मूर ने भी यूटोपिया में स्वर्ग राज्य पर तंज कसे । इन चिंतकों ने चिंतन की धारा बदलकर परलोक की जगह इसी वर्तमान लोक को सुखी और संसाधन युक्त बनाने की वकालत करने लगे। इस चिंतन ने स्थापत्यकला, मूर्तिकला, चित्रकला, साहित्य, धर्म, विज्ञान और संगीत को बदल दिया। इन सभी विषयों के केन्द्र में मनुष्य और उसका जगत आ गये। पेट्रार्क (1304–1367 ई.) ने यूनानी और लैट्रिन कृतियों में वंचित मनुष्य की शक्ति, गौरव, और समानता सम्बन्धी विचारों और मान्यताओं का अपने लेखन में समर्थन किया। इसी से मानववाद का जन्म हुआ और आगे की शताब्दियों में मानवाधिकारों की पुनर्स्थापना के लिए बहस प्रारंभ हुई। अतः पुनर्जागरण के पश्चात प्रबोधन और प्रबोधन के बाद मानवतावाद और तत्पश्चात मानवाधिकार आंदोलनों का जन्म हुआ। 26 जनवरी, 1950 ई. को भारत का संविधान लागू हुआ। भारतीय संविधान की प्रस्तावना, मौलिक अधिकार एवं नीति निर्देशक तत्वों में मानवाधिकार की भावना परिलक्षित होती है। भारत का संविधान मनुष्य का सम्पूर्ण विकास चाहता है। यह उसके आत्मसम्मान और कल्याण को प्रोत्साहित करता है।

आज मानवाधिकार मनुष्य को समग्ररूपेण सुरक्षा देता है। उसके स्वतंत्र निवास एवं विकास में आने वाली बाधाओं को दूर करता है। फलतः यूरोप में पहले पुनर्जागरण फिर ज्ञानोदय और तत्पश्चात मानवाधिकारों की स्थापना की वकालत की गई। मानववाद की विशेषताओं का व्यवहार रूप में रूपांतरण ही मानवाधिकार है। इसका ठोस सामाजिक प्रकटीकरण, अमेरिका की क्रांति में मानव अधिकारों का घोषणा से हुई। इस घोषणा के अमर वाक्य इस प्रकार से है:–

''हम इन सिद्धांतों को स्वयंसिद्ध मानते हैं कि सभी मनुष्य समान अधिकार लेकर पैदा हुए हैं और उन्हें स्रष्टा द्वारा कुछ अविच्छिन्न अधिकार मिले जीवन, स्वतंत्रता और सुख की खोज इन्ही अधिकारों में है। इन्हीं अधिकारों प्राप्ति हेतु समाज ने राज्य को बनाया। राज्य को लोक से न्यायोचित सत्ता करने का अधिकार मिला है। परन्तु अगर राज्य इन न्यायोचित अधिकारों पर कुठारघात करता है तो या तो उसे बदल दिया जाये या फिर समाप्त कर जाये। दूसरी सरकार की स्थापना भी इसी भाव से होना चाहिए कि जनता ही सुरक्षा और कल्याण सुरक्षित हो जाये।'' इससे मानवाधिकारों को जन–जन तक जाने में आसानी हो गई। इस घोषणा पत्र के प्रमुख शिल्पी जेफरसन ने ब्रिटिश दार्शनिक जॉन लॉक के जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति के अधिकार के सिद्धांत को भी मानवाधिकार से जोड़ दिया। आगे फ्रांस की संविधान सभा ने 26 अगस्त, 1789 ई. में मानवाधिकारों की घोषणा की। जिसमें श्समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व, मनुष्य के स्वाभाविक अधिकार माने गए। मानव अधिकारों में स्वतंत्रता, संपत्ति, सुरक्षा के लिए तथा अत्याचार के विरोध के लिए संघर्ष करने की बात की गई।

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487 editor@aijmr.com
Volume 2, Issue 1, January-February 2024
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2024.v02i01.1309

मानवाधिकार मनुष्य का जन्मजात नैसर्गिक अधिकार है। यह समाज और राज्य द्वारा मानव के प्रति स्वाभाविक कर्तव्य है। यह एक मानव धर्म है। यह एक नैतिक प्रतिबद्धता है। मानवाधिकार मनुष्य के जन्मजात अपृथक होने वाला मौलिक अधिकार है। यह सार्वभौम और सर्वत्र है। मनुष्य पृथ्वी पर कहीं भी निवास करे ये किसी भी देश के कानून से पृथक नही किये जा सकते। ये अधिकार उस देश के कानून से प्रभावित नहीं होते हैं। ये प्राकृतिक और विश्व समाज से स्वीकृत हैं, जिसे 1948 मे संयुक्त राष्ट्र संघ ने वैधानिकता प्रदान की है। प्राचीन समाजों में इनके प्रति जागरूकता नहीं थी, पर यह कुछ समाजों मे तर्कसंगतता के आधार पर उसमें अन्तर्निहित थे। आधुनिक काल के प्रारंभ मे यह यहूदी ईसाई परम्परा के शोषणकारी कीचड़ से पनपा कमल था। मानववाद के प्रवर्तक पैट्रार्क की रचनाओं मे इसका प्रस्फुटन हुआ था। यह मनुष्य के प्राकृतिक अधिकारों का समाज मे न्यायिक प्रकटीकरण है। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में मानववाद की परिभाषा इस प्रकार से है–

''यह एक दृष्टिकोण अथवा विचार प्रणाली है, जिसका सम्बन्ध दैवीय और अलौकिक की जगह मनुष्य से है। यह ऐसा विश्वास है जो सामान्य मानवीय आवश्यकताओं और समस्याओं पर विचार करता है। यह मानवीय समस्याओं का निदान दैवीय हस्तक्षेप या सहायता की जगह तर्क विज्ञान और परीक्षण से इसी लोक में ढूँढता है। यह मानव को उत्तरदायी एवं तर्क शक्ति से युक्त बुद्धिजीवी मानता है। यह मानव की स्वयं की क्षमता में विश्वास रखता है।''

अर्थात यह सिद्धांत मनुष्य को विकास करने का स्वाभाविक अधिकार देता है। इसके अनुसार मनुष्य और प्रकृति दोनों एक दुसरे के अन्योन्याश्रय है। मनुष्य डिवाइन सुपर एजेन्सी द्वारा उत्पन्न एक सर्वशक्तिमान जीव है। जो अपनी क्षमताओं, गुणों और मेधा का विकास कर बहुत सक्षम और चमत्कारी बन जाता है। पुनर्जागरण से पहले मध्यकालीन यूरोप में मानव को धर्म और ईश्वर के अधीन कर दिया गया था। यूरोपीय समाज और मानव का चिंतन ''थियोलॉजिकल'' (धर्मशास्त्रीय) हो गया था। ईश्वर और धर्म मनुष्य के चिंतन के मुख्य विषय हो गये थे। मनुष्य और समाज के जीवन में घटित होने वाली सभी घटनाओं का श्रेय धर्म और ईश्वर को दिया जाता था। परन्तु 15वीं, 16वीं शताब्दी में इटली और यूरोप में आये पुनर्जागरण और उसके पश्चात् ज्ञानोदय, आविष्कारों और प्रबोधन के युग ने मनष्य के चिंतन और कार्यों में भारी परिवर्तन ला दिया। अब इस सृष्टि (जगत) का केन्द्र बिन्दु मनुष्य बन गया। मनुष्य अपनी इच्छा से अपना भाग्य विधाता बन गया। अब मनुष्य की आस्था पर उसका विवेक प्रभावी हो गया। महत्वपूर्ण परिवर्तन यह हुआ कि मनुष्य को सत्य और असत्य सही और गलत तथा न्याय–अन्याय में भेद करने का विवेकपूर्ण अधिकार मिल गया । ज्ञानोदय ने मनुष्य को तार्किक और विकासगामी बना दिया। चिंतन की दुनिया में, परम्परा और धर्म की जगह तर्क विश्लेषण, संश्लेषण और वैयक्तिक स्वतंत्रता ने ले लिया। अन्वेषण और अनुसंधान मनुष्य के प्रमुख कार्य हो गये। ज्ञानोदय काल (1650–1780 ई.) के चिंतकों ने देखा कि इस भौतिक दुनिया और प्रकृति में होने वाली घटनाओं के पीछे किसी–न–किसी अपरिवर्तनशील प्राकृतिक नियम का हाथ है। बेकन ने कहा कि धारणा को परखने के तीन साधन हैं – अनुभव, तर्क और प्रमाण। मनुष्य अब बिना प्रमाण विश्वास नहीं कर सकता था। ज्ञानोदय काल मे चिंतकों ने ज्ञान को प्राकृतिक विज्ञानों के साथ जोड़ दिया। पर्यवेक्षण, प्रयोग और आलोचनात्मक छान–बीन की व्यवस्थित पद्धित का प्रयोग ज्ञानोदय के चिंतकों की नजर में सत्य तक पहुँचने के आधार थे।

इस अधिकार का विकास अमेरीकी क्रांति और फ्रांस की क्रांति के दौरान हुआ था। इन देशों मे मानवाधिकारों को शासन का हिस्सा बनाया गया है। यह पुर्नजागरण के हिरण्य गर्भ से जन्मा है, ठीक उसी प्रकार से जैसे आधुनिक पश्चिम और समाज विज्ञानो का जन्म हुआ है। यह ईसाई–यहूदी खोखली नैतिकता, पोप की मठाधीशी एवं योरोपीय मध्यकालीन सामंती मानसिकता के ध्वंशावशेष पर था। यह प्रबुद्ध निरंकुश राजतंत्रो के राष्ट्रवाद एवं राष्ट्र–राज्यों के उत्थान के साथ संवैधानिक सत्ता के विकास के साथ विकसित होता गया। जब वाल्तेयर ने कहा कि गरीबी इतनी न हो कि अपने आप को बेचना पड़े और अमीरी इतनी न हो कि आदमी–आदमी को खरीद ले । मतलब मानवीय गरिमा और सतुलन बने रहने चाहिए। यह वाल्तेयर का कथन मानव अधिकारों की प्राप्ति के विकास यात्रा मे मील का पत्थर सिद्ध हुआ। मानवाधिकार नोपालियन और मैटरनिख के तानाशाही के अंत के बाद 1848 की क्रांतियों के दौरान हुआ। फ्रांस की क्रांति के उद्घोष मंत्र, स्वतंत्रता समानता और बन्धुता आगे बढ़ाया। संयुक्त राज्य अमेरिका का वर्जिनिया घोषणा (1778) तथा क्रांति में नागरिक अधिकारों की घोषणा (1789) ने इसे बल प्रदान किया।

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487 editor@aijmr.com
Volume 2, Issue 1, January-February 2024
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2024.v02i01.1309

निष्कर्ष

पुनर्जागरण यूरोप के इतिहास का एक महत्वपूर्ण मोड़ था। इसने मध्यकालीन अंधविश्वास और रूढ़ियों को समाप्त कर आधुनिक विचारधारा को जन्म दिया। मानवतावाद, विज्ञान, शिक्षा, कला और राजनीतिक चेतना के विकास ने आधुनिक यूरोपीय समाज की नींव रखी। पुनर्जागरण के बिना आधुनिक लोकतंत्र, मानव अधिकार, वैज्ञानिक प्रगति और आधुनिक संस्कृति की कल्पना संभव नहीं होती। इस प्रकार पुनर्जागरण केवल सांस्कृतिक आंदोलन नहीं था, बल्कि आधुनिक यूरोप के निर्माण की आधारशिला था।

संदर्भ सूची

1. हर, माइकल, एच., हिस्ट्री ऑफ लाइब्रेरीजइन दी वेस्टर्न वर्ल्ड, लंदन, 1999,
2. बर्क, पी., दी स्प्रेड ऑफ इटेलियन ह्यूमानिज्म, इन दी इम्पैक्ट और ह्यूमानिज्म ऑन वेस्टर्न यूरोप, लंदन, 1990,
3. हॉस, एस, एण्ड माल्टबी, डब्ल्यू, ए हिस्ट्री ऑफ यूरोपियन सोसा एशेंसियल्स ऑफ वेर्स्टन सिविलाइजेशन
4. मिरांडोला, पिकोडेला, ओरेशन ऑन दी डिग्निटी ऑफ मैन, रोम (यह एक सार्वजनिक संवाद पुस्तक थी) – गुगल बुक्स।
5. शर्मा, बृज किशोर, भारत का संविधान एक परिचय, पी.एच. ल. नई दिल्ली , 2015,
6. ब्रॉटन, जे, साइंस एण्ड फिलॉसॉफी, इन दी रेनेसां : ए वेरी शॉर्ट इन्ट्रोडक्शन ऑक्सफोर्ड, 2006.
7. बी. एल. ग्रोवर कृ विश्व इतिहास
8. जैन एवं माथुर कृ आधुनिक विश्व का इतिहास
9. वी. डी. महाजन कृ यूरोप का इतिहास
10. रामशरण शर्मा कृ विश्व सभ्यता का इतिहास
11. Norman Davies — Europe: A History
12. Will Durant — The Renaissance